स्टीवन हेरिसन ''खुशहाल बचपन'' पुस्तक में दृढ़ता पूर्वक बताते हैं कि बच्चे स्वाभाविक रूप से सीखना चाहते हैं, इसलिए उन्हें अपनी शिक्षा का ज़िम्मा खुद लेने दो – लोकतांत्रिक सीखावन समुदाय में, जहाँ बच्चे अपने आसपास से, अपने समाज से, गाँव से और पूरे संसार से ही सीख सकें।

इस पुस्तक के माध्यम से हैरिसन न सिर्फ शिक्षा पर फिर से विचार करने की बात करते हैं अपितु हमारे परिवार, समाज, समुदाय, हम क्या काम करते हैं, कार्यस्थल आदि पर भी पुर्नविचार की बात करते हैं, वास्तव में उस पर कि वह क्या है जो हमें और हमारे बच्चों को खुशी दे सकती है।

''अपने बच्चों को बहुत दूर किसी ऐसे गोदाम में भेज देना, जहाँ वे राजनीतिज्ञों और अकादमिक सिद्धांतकारों द्वारा बनाए गए पाठ्यक्रमों के माध्यम से अजनबियों द्वारा शिक्षित किए जाने हैं, यह सोचना ही इतना अजीब और बच्चे की हकीकत से इतना अंसबद्ध है कि हमें आश्चर्य होता है कि हमारे समाज का किस तरह से यह एक यथार्थ बन गया है। हम आखिर अपने बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार क्यों चाहते हैं? सिर्फ स्वयं की इस आश्वस्ति के लिए कि यह उनके ही भले के लिए है। आखिरकार हम खुद को दूर भेजा जाना खुद ही स्वीकार करते हैं, असल में हम स्वयं अपने को उन गोदामों में पहुँचाते हैं, जहाँ हम काम करते हैं। ऐसे में हम अपने बच्चों के लिए इसी तरह के भाग्य के स्वीकारणीय होने की कल्पना कर सकते हैं।''

अनुक्रमणिका : प्रस्तावना

भाग I : **खुशहाल बचपन** 1. सीखना और प्रसन्नता 2. समूचे बालक को शिक्षित करना 3. असफल होना सीखना 4. शिक्षा देने वाला कौन है?

भाग II **: शिक्षा और भय** 1. बिना भय के सीखना 2. विफल होती श्रेणियाँ 3. परीक्षण, परीक्षण 4. सीखना और आचरण 5. भय के परे 6. विखण्डित संसार में खुशहाल बालक 7. शिक्षा की विफलता

भाग III : **लोकतांत्रिक तरीके से सीखना** 1. व्यक्ति और समाज 2. अनिवार्य शिक्षा 3. थोपा गया पाठ्यक्रम और राज्य की कठपुतलियाँ 4. सीखने में बहस और निर्णय निर्धारण 5. स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व : आप एक के बगैर दूसरे के बारे में नहीं सोच सकते

भाग IV : **सीखना और विश्वास** - खोए हुए यथार्थ का अनूठा मसला 1. संस्कृति और दृष्टिकोण 2. तकनीक की तरह विचार 3. कुछ नहीं जिसे आप खोजते रहे है 4. नवीन नाट्यवृत्त की वास्तविकता : तथ्य और कल्पना का मिश्रण 5. मस्तिष्क के लिए सबकुछ आहार है 6. अपने अविश्वास को बाँटना

भाग V : **सीखने का मर्म** 1. तीन से बढ़े किसी पर विश्वास मत करो 2. न जानने का अथाह ज्ञान 3. आध्यात्मिकता और सीखना 4. सीखने के मर्म का मार्गदर्शन

भाग VI : **अधिगम समुदायों का सृजन** 1. जीवन्त स्कूल 2. उत्पाकदकता और खुशी 3. सोद्देश्य परिवार 4. जीवन्त समुदाय 5. अधिगम समुदाय